प्रमुख लिपियाँ

drishtiias.com/hindi/printpdf/important-scripts

- लिपि प्रतीक-चिह्नों की एक व्यवस्था है जिसके तहत भाषाओं को लिखा जाता है।
- भारत में भीमबेटका के गुफा-चित्रों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि लेखन कला की शुरुआत चित्र-लिपि से हुई।
- भारत में लिपि की उत्पत्ति हड़प्पा सभ्यता से मानी जाती है, किंतु आज तक मनुष्य उस लिपि को पढ़ने में कामयाब नहीं हो सका है।
- इसके अलावा कुछ अन्य लिपियाँ हैं-

ब्राह्मी लिपि

- ब्राह्मी भारत की अधिकांश लिपियों की जननी है तथा इसका प्रयोग सम्राट अशोक के लेखों में हुआ है।
- 5वीं सदी ईसा पूर्व से 350 ईसा पूर्व तक इसका एक ही रूप मिलता है, लेकिन बाद में इसके दो विभाजन मिलते हैं- उत्तरी धारा व दक्षिणी धारा।
- ब्राह्मी की उत्तरी धारा में गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा और देवनागरी को रखा गया है।
- दक्षिणी धारा में तेलुगु, कन्नड़, तमिल, कलिंग, ग्रंथ, मध्य देशी और पश्चिमी लिपि शामिल हैं।
- ब्राह्मी लिपि बायें से दायें लिखी जाती थी।

खरोष्ठी लिपि

- भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में प्रचलित यह लिपि दायें से बायें लिखी जाती थी।
- इसे विदेशी उद्गम लिपि यानी अरामाइक और सीरियाई लिपि से विकसित माना जाता है।
- कुल 37 वर्णों वाली इस लिपि में स्वरों का अभाव था, यहाँ तक कि मात्राएँ और संयुक्ताक्षर भी नहीं मिलते हैं।
- सम्राट अशोक के शहबाज़गढ़ी और मानसेहरा (पाकिस्तान) स्थित अभिलेखों में खरोष्ठी लिपि का प्रमाण मिलता है।

जेम्स प्रिंसेप (1799-1840): 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक जेम्स प्रिंसेप आधुनिक युग में पहली बार ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने के लिये जाने जाते हैं।

कुटिल लिपि

- गुप्त लिपि का परिवर्तित रूप मानी जाने वाली इस लिपि को 'न्यूनकोणीय लिपि' तथा 'सिद्ध मातृका' लिपि भी कहा जाता है।
- इस लिपि में अक्षरों के सिर ठोस त्रिकोण जैसे हैं, लेकिन कहीं-कहीं ये आड़े-तिरछे, टेढ़े-मेढ़े या कुटिल ढंग से भी हैं।
- यह लिपि छठी शताब्दी से 9वीं शताब्दी तक प्रचलन में रही।

देवनागरी लिपि

- बायें से दायें की ओर लिखी जाने वाली देवनागरी लिपि अत्यंत व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक लिपि है।
- इसमें ध्वनि एवं अक्षरों का उत्कृष्ट समन्वय होता है।
- भारत के संविधान में देवनागरी लिपि को मान्यता प्रदान की गई है (अनु. (1)।
- उत्तर भारत में 8वीं शताब्दी से आज तक अनेक भाषाओं में देवनागरी का प्रयोग होता आया है, यथा- संस्कृत, मराठी, हिन्दी, भोजपुरी, नेपाली, कोंकणी, मैथिली, गढ़वाली आदि।

शारदा लिपि

आठवीं शताब्दी में कश्मीर में 'सिद्ध मातृका लिपि' से विकसित इस लिपि के अनेक अभिलेख कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि में मिले हैं।

गुरुमुखी लिपि

सिखों के दूसरे गुरु अंगद द्वारा विकसित इस लिपि में पंजाबी भाषा में 'गुरु ग्रंथ साहिब' का संकलन हुआ है।

ग्रंथ लिपि

- दक्षिण भारत (तमिलनाडु) के पल्लव, पांड्य एवं चोल शासकों ने इसका विकास किया।
- महाबलीपुरम् में धर्मराज रथ पर ग्रंथ लिपि में विवरण अंकित हैं।
- राजसिंह द्वारा बनवाए गए कैलाश मंदिर पर उत्कीर्ण शिलालेख, ग्रंथ लिपि में ही हैं।

तेलुगू एवं कन्नड़ लिपि

- इन दोनों लिपियों का उद्गम स्रोत एक ही है और चालुक्यकालीन हलेबिड शिलालेख (कर्नाटक) इसका प्राचीनतम साक्ष्य है।
- बाद में यह लिपि स्वतंत्र रूप से विभाजित हो गई- तेलुगू एवं कन्नड़ लिपि में।

तमिल-मलयालम लिपि

दोनों का विकास ग्रंथ लिपि से हुआ है।

शाहमुखी लिपि

यह सूफियों द्वारा चलाई गई ईरानी लिपि का पंजाबी संस्करण है।

मोडी लिपि

- यदुवंशी महामंत्री हेमात्रि ने इसे शुरू किया।
- अक्षरों में तोड़-मोड़ के कारण इसे मोडी लिपि कहा गया।
- 1950 से पहले मराठी को इसी लिपि में लिखा जाता था।

राज्यों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएँ

क्रम	राज्य	मुख्य भाषा	बोली जाने वाली अन्य भाषाएँ
A	केरल	मलयालम (96.6%)	तमिल, कन्नड़
	पंजाब	पंजाबी (92.2%)	हिन्दी, उर्दू
	गुजरात	गुजराती (91.5%)	हिन्दी, सिंधी
	हरियाणा	हिन्दी (91.0%)	पंजाबी, उर्दू
	उत्तर प्रदेश	हिन्दी (90.1%)	उर्दू, पंजाबी
	राजस्थान	हिन्दी (89.6%)	भीली, उर्दू
	हिमाचल प्रदेश	हिन्दी (88.9%)	पंजाबी, किन्नौरी
	तमिलनाडु	तमिल (86.7%)	तेलुगू, कन्नड़
	पश्चिम बंगाल	बांग्ला (86.0%)	हिन्दी, उर्दू
	आंध्र प्रदेश	तेलुगू (84.8%)	उर्दू, हिन्दी
B	मध्य प्रदेश	हिन्दी (85.6%)	भीली, गोंडी
	बिहार	हिन्दी (80.9%)	उर्दू, संथाली
	ओडिशा	उड़िया (82.08%)	हिन्दी, तेलुगू
	मिज़ोरम	लुसाई (75.1%)	बांग्ला, लाखेर
	महाराष्ट्र	मराठी (73.3%)	हिन्दी, उर्दू
C	गोवा		मराठी, कन्नड़
	मेघालय		गारो, बांग्ला
	त्रिपुरा		त्रिपुरी, हिन्दी
	कर्नाटक		उर्दू, तेलुगू

D	सिक्किम मणिपुर असम	भोटिया, लेप्चा थाडूउ, थांगखुल बांग्ला, बारो
E	अरुणाचल प्रदेश नागालैंड	नेपाली, बांग्ला सेमा, कोनयाक